श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद Answer-Sheet

अभ्यासक्रम क्रं. : ८ ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर 8 शहर _____

विद्यार्थी का नाम _____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	मोक्ष प्राप्ति
(२)	सूर्य
(३)	महामारी
(४)	तपागच्छ
(५)	उनके/श्रीपार्श्वचंद्रसूरि
(६)	मिश्र औदारिक
(७)	उपद्रवों
(८)	विकलेंद्रिय
(९)	स्वोपज्ञवृत्ति
(१०)	परिपक्वता
(११)	बाह्यवर्तन
(१२)	पंचांगी आगम
(१३)	विजया देवी
(१४)	सूक्ष्मक्रिया, निवृत्ति
(१५)	हस्तप्रते
(१६)	कार्यकारण
(१७)	जिन-प्रणीत
(१८)	चैत्यवास
(१९)	सयोगी गुणस्थानक
(२०)	आजीविका

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	पूर्व कर्म
(२)	आचार्य श्री देवसूरिजी
(३)	श्री मानदेवसूरि
(४)	समस्त लोक और अलोक
(५)	श्री शांतिनाथ भगवान
(६)	कर्म
(७)	तिसरा और चवथा आरा
(८)	आ. सोमचंद्रसूरि
(९)	७ वा
(१०)	पापोदय
(११)	सातोंनरको में
(१२)	वेदनीय और आयुष्य
(१३)	राव गांगा
(१४)	सदालपुत्र
(१५)	षडदर्शन

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	देव
(२)	उत्पन्न होते है
(३)	मथनी
(४)	युक्त

(५)	पृथ्वी तलपर
(६)	काय योग में
(७)	में
(८)	स्तवना की गई
(९)	हाल में रखे हुओ
(१०)	सूर्य
(११)	छोडकर
(१२)	एवम्
(१३)	करके
(१४)	सिवाय
(१५)	वनस्पतिकाय
(१६)	प्राप्त करते है
(१७)	तुष्ट हो गई
(१८)	सातो
(१९)	जिनके
(२०)	प्रशस्त

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	३
(२)	१०	(७)	९
(३)	७	(८)	४
(४)	१	(९)	२
(५)	८	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	४४
(२)	५
(३)	६६
(४)	छेक्रोड वर्ष
(५)	22
(६)	१६८८
(७)	१६
(८)	५
(९)	७
(१०)	सातो ७

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१)	×
(२)	✓
(३)	×
(४)	×
(५)	✓
(६)	✓
(७)	×
(८)	✓
(९)	×
(१०)	✓

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१)	20
(२)	१२
(३)	१
(४)	९
(५)	१७
(६)	१८
(७)	१२
(८)	५
(९)	१४
(१०)	९

[ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] = [ ]

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. १) कार्य-जो कार्य जिस समय में होनेवाला है, उसी समय में होता है। अनुकूल समय पर योग्य स्वभाव में योग्य पुरुषार्थ करने में आये तो सफलता सरल बनती है। काल की परिपक्वता होती है तभी कार्य की सिद्धि होती है। २) स्वभाव-कार्यसिद्धि के लिए योग्य कार्य प्राप्त हुआ हो पर स्वभाव का संयोग नही मिले तो कार्य सिद्ध नही होता है। बीज को खेत में उगाने मे आया तो उसमे से योग्य कार्य होने पर रोप या वृक्ष की प्राप्ती होनी चाहिए। पर यदि बीज जला हुआ है, वृक्षनिर्माण के स्वभाव का नाश हो गया हो तो उसमें से वृक्ष नही होता है। ३) नियती-काल और स्वभाव अनुकूल हो पर यदि काल की परिपक्वता नहिं हुई हो तो कार्य नही होता है। स्वभाव से जीव भव्य हो, काल भी अनुकूल हो फिर भी यदि नियती अनुकूल नहीं हो तो कार्य होता नहीं है।

२. मुनिश्री यशोविजयजी की तेजस्विता, बुद्धि और सुयोग्यता पहचान कर श्रेष्ठी श्री धनजी सुरा ने गुरुभगवंत को निवेदन किया की कि इस महात्मा को काशी जाकर विद्याभ्यास कराओ तो श्री जिनशासन को दूसरे हरिभद्रसूरि म.सा. या हेमचंद्रसूरि म.सा. मिलेंगे। और इसके लिये सारी व्यवस्था का लाभ खुद लिया, इसके अनुसार गुरुभगवंत के साथ मुनि श्री यशोविजयजी ने काशी की ओर विहार किया। गंगानदी के किनारे ऐंकार के जापसे श्री सरस्वती देवी को प्रसन्न कर वरदान प्राप्त किया। काशी मे तीन बरस और फिर आग्रा में चार बरस तक प्रकांड भट्टाचार्य विद्वान के पास षड्दर्शन वगैरह का गहन अध्ययन किया। बाद में सौ ग्रंथों की रचना की इसलिए काशी विद्वानों ने उन्हे "न्यायविशारद" और "न्यायाचार्य" ये दो सन्मानभरे बिरुद दिये। उसके बाद भी उन्होंने अनेक बेजोड रचनाए की है।

३. जो जीव विशेषत: अरिहन्त भक्ति प्रमुख बीसस्थानक तप का सेवन करते है, वह जीव तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करता है, और सयोगी गुणस्थानक पर तीर्थंकर नामकर्म के उदय से केवलज्ञानी बनकर जगत्पति त्रिभुवनाधिपति बनता है। तीर्थंकर प्रभु चौतीस अतिशयों से युक्त होते है। चार अतिशय जन्म से होते है। ग्यारह अतिशय कर्मक्षय से होते है। उन्नीस अतिशय देवकृत होते है। मनुष्य और देवता उन्हे नमस्कार करते है, पूजते है, श्रेष्ठ सर्वोत्तम उपदेश से तीर्थंकर शासन प्रवर्ताते है। तीर्थंकर परमात्मा निर्मल देशना देकर अनेक भव्यात्माओं को प्रतिबोधीत कर सर्वविरति देशविरति आदि व्रत देकर तीर्थंकर नामकर्म भोगते है। तीर्थंकर पृथ्वीपीठ पर सुवर्णकमलोपर पैर रखकर विचरते है। अष्टमहाप्रातिहार्य उनके साथ होते है। करोडो सुर-असुर उनकी सेवा में रहते है।

४. पृथ्वीकाय दस पदों के बारे में बताते है की वे पृथ्वीकाय, अपकाय और वनस्पतिकाय में उत्पन्न होते है। पृथ्वीकायादि दस पदोंमेंसे निकले हुए जीव तेउकाय और वाउकाय में उत्पन्न होते है। पृथ्वीकायादि दस पद याने पाँच स्थावर-पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय और वनस्पतिकाय, तीन विकलेन्द्रिय- बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच और गर्भज मनुष्य। इन दसपद में पृथ्वीकाय, अपकाय और वनस्पतिकाय के जीव आते है। इन दस पदों में से ही तेउकाय-वाउकाय में जाते है। जीव जैसे कर्म करता है उसके अनुसार उसे गति मिलती है। हमे यदि शुभ-गति चाहिए तो शुभकर्म करने ही पडेंगे। अशुभकर्म से शुभगति नहीं मिलती।

५. श्री पार्श्वचंद्रसूरिजी की साहित्य साधना विपुल प्रमाण में है। उन्होंने संस्कृत, प्राकृत और गुजराती भाषा में भरपूर गद्य-पद्य साहित्य रचना करके खुले हाथो से ज्ञानदान किया है। "सप्तपदीशास्त्र", "संघरंगप्रबंध", "खंदक चरी", "सुरदीपिका", "रुपकमाला", "पूजाशतक", "विधिशतक", "विधिविचार", "उपदेशसार", इ. ग्रंथोमें अनेक उपदेश, उनके द्वारा किये गये क्रियोद्धार की चर्चा उनके संशोधन की व्यापकता वगैरे सम्मिलित है। उनके ग्रंथ विचारो की मौलिकता, तर्कबद्धता और स्पष्टता से प्रभावित है। उन्होंने अनेक संख्याबंध प्रकरण, छत्रीसीयाँ, बत्तीसीयाँ, कुलको, रास, स्तवन, सज्झाय, स्तुति इ. की रचना की है, जिसमे उनकी विद्वत्ता, कवित्व, भक्ति, मौलिकता के सुंदर दर्शन होते है।